भारत पर अरबों का आक्रमण

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

अरबों का सातवीं शताब्दी में अचानक एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उदय हुआ| इनका भारत ही नहीं विश्व के अन्य देशों पर भी अधिकार कर लेना एक आश्चर्यजनक बात है| यद्यपि वे भारत पर अपना स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ सकें| हम इस लेख में भारत पर अरबों का आक्रमण के बारे में बता रहे है|

भारत पर अरबों का आक्रमण

भारत पर अरबों का आक्रमण विषय में पर्याप्त सूचना 9वीं शताब्दी के विलादूरी द्वारा लिखी किताब 'फुतूल-उल वलदान' में मिलती है। 1216 ई. में लिखी गयी एक अन्य पुस्तक 'चचनामा'में भी bharat par arbo ka akraman के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है| यह पुस्तक फारसी में अनुवाद की गई है (अरबी का फारसी अनुवाद)|

अरब पहले मुसलमान आक्रमणकारी थे, जिन्होंने भारत पर आक्रमण किया। मकरान के मरूप्रदेश के समतली मार्ग से वे सिन्ध में प्रवेश करने में सफल हुए।

708 ई. में मीरकासिम (मुहम्मद बिन कासिम) ने सिन्ध पर सफल आक्रमण किया। लेकिन इससे पहले पूर्व खलीफा उमर के समय में 636 ई. में बम्बई के निकट थाना में विजय के लिए एक अभियान भेजा गया| परन्त वह असफल रहा। इसी अभियान के दौरान भारत के लोग सर्वप्रथम इस्लाम के सम्पर्क में आये| दूसरा अभियान खलीफा उस्मान के समय 644 ई. में अब्दुल्ला बिन उमर के नेतृत्व में स्थल मार्ग द्वारा मकरान के पश्चिमी सिंध पर किया गया| इसके पश्चात अल-हरीस ने 659 ई. में और अल-मुहल्लव ने 644 ई. में अभियान किया।

708 ई. में दमिश्क के खलीफा वलीद को सिंहल राजा द्वारा भेजे गये उपहारों से भरे जहाज को सिंध के बंदरगाह देवल के पास के लुटेरों ने लूट लिया। हज्जाज ने 711 में इस अपमान का बदला लेने के लिए राजा दाहिर को दण्ड देने हेतु उबेदुल्लाह तथा फिर बुदैल के नेतृत्व में अभियान भेजे परन्तु वे असफल रहे। तत्पश्चात 'मीरकासिम' के नेतृत्व में अभियान भजा गया जो सफल रहा| इस अभियान को भारत पर अरबों के सफल आक्रमण आक्रमण के रूप में देखा जाता है|

712 ई. में मीरकासिम (मुहम्मद बिन कासिम) ने सिन्ध पर सफल आक्रमण किया। सबसे पहले उसने थट्टा के पास स्थित देवल बंदरगाह को अपने अधीन करना चाहा। इसे 'रावर' का युद्ध भी कहा जाता है। 713 ई. में

मीर कासिम ने मुल्तान पर सफल आक्रमण किया। अरबों के विरूद्ध भारतीयों की असफलता का कारण सिन्ध के राजा दाहिर का नकारापन था। उसकी अदूरदर्शिता ही सिन्ध के पतन का कारण बनी।

प्रभाव

अरबों ने भारतीय जनजीवन को काफी प्रभावित किया और स्वयं भी प्रभावित हुए। अरबों ने चिकित्सा, दर्शनशास्त्र, नक्षत्र विज्ञान, गणित और शासन प्रबन्ध की शिक्षा भारतीयों से ली। मंसूर के समय (753-774 ई.) अरब विद्वान भारत से बगदाद अपने साथ दो पुस्तकें लेकर गये। ब्रह्मगुप्त का ब्रह्म सिद्धान्त तथा खण्ड-खाद्य।

भारतीयों की सहायता से अलफजारी ने अरबी में इन पुस्तकों का अनुवाद किया। पंचतंत्र का अनुवाद अरबी भाषा में 'कलिलावादिम्ना' नाम से हुआ जिसका उल्लेख अल्बरूनी ने किया है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि सूफी मत पर बौद्ध धर्म का प्रभाव था।

अरबों ने सिंध में 'ऊँट पालन' तथा 'खजूर की खेती' का प्रचलन किया। उन्होंने दिरहम नामक सिक्के का प्रचलन करवाया। अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम ने सिंधवासियों से 'जजिया' नामक कर की पहली बार वसूली की।

स्पष्ट है की मुसलमानों में अरबों ने सबसे पहले भारत पर आक्रमण किया| इनका सातवीं शताब्दी में अचानक एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उदय हुआ| और इन्होने भारत ही नहीं विश्व के अन्य देशों पर भी अधिकार कर लिया| यह भारत पर पहला मुसलमान आक्रमण था इसके बाद भारत पर तुर्कों का आक्रमण होता है| इसके बारे में हम अगले लेख में चर्चा करेंगें|

हम आशा करते है की इस लेख ने आपको भारत पर अरबों के आक्रमण(Arab invasion on India in hindi) के बारे में मोटे तौर पर समझने में सहायता की| आपको दिल्ली सल्तनत के आरम्भिक तुर्क शासकों के बारे में पढना पंसद हो सकता है|